माननीय Prof. Savita Gupta, Director, Research & Development Cell, Prof. Ashok Kumar, chairperson Department of Hindi, Faculty Members of Panjab University, Scholars, Students और उपस्थित सभी नगर वासियों को मेरा सादर नमस्कार।

संत रविदास जैसे महान संत, चिंतक और समाज-सुधारक के जीवन और विचारों पर आयोजित इस महत्वपूर्ण Seminar में आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

संत रविदास भारतीय संत परंपरा के ऐसे महानसंत हैं, जिन्होंने भक्ति को केवल Ishwar की पूजा तक सीमित नहीं रखा, Balki उसे मानवता, समानता और सामाजिक समरसता से जोड़ा। उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि मनुष्य की पहचान उसके जन्म से नहीं, Balki उसके कर्म और उसके आचरण से होनी चाहिए।

उनका Important Message है-

“"Aisa chahun raj main, jahan milai saban ko ann,

Chhot-bado sabh sam basai, Ravidas rahe parsann."

इन Lines में एक ऐसे समाज की कल्पना है जहाँ किसी के साथ भेदभाव ना हो, कोई भूखा ना रहे और हर व्यक्ति सम्मान के साथ जीवन जी सके।

यदि आज की भाषा में कहें तो संत रविदास एक ऐसी inclusive society की बात करते हैं, जिसमें विकास का लाभ समाज के हर आदमी तक पहुँचे।

हमारे संविधान की मूल भावना भी हमें Justice, Equality, Freedom और Brotherhood का संदेश देती है। इसलिए संत

रविदास के विचार केवल इतिहास का हिस्सा नहीं हैं, Balki आज के भारत के लिए भी अत्यंत relevant हैं।

आज भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। Technology, A. I., Digital Revolution और New Economic opportunities हमारे सामने हैं। लेकिन हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि विकास की इस यात्रा में कोई व्यक्ति पीछे न छूटे। वास्तविक विकास वही है, जिसमें समाज के अंतिम व्यक्ति को भी सम्मान, अवसर और विकास करने का अधिकार मिले।

संत रविदास ने कर्म की गरिमा को भी अपने जीवन से स्थापित किया। उनका संदेश आज भी बहुत महत्वपूर्ण है- Koi भी ईमानदार काम छोटा नहीं होता।

किसान का कर्म ho, मजदूर का कर्म ho, शिक्षक का ज्ञान ho, डॉक्टर की सेवा ho, सैनिक का त्याग ho या सफाई कर्मचारी का कर्म- राष्ट्र निर्माण में हर योगदान महत्वपूर्ण है।

इसलिए हमें अपने बच्चों में dignity of labour और respect for every profession की भावना विकसित Karni होगी।

मैं विशेष रूप से युवाओं से कहना चाहूँगा कि संत रविदास को केवल syllabus का विषय बनाकर न पढ़ें। उनके विचारों को अपने जीवन में उतारें। जहाँ किसी के साथ भेदभाव हो, वहाँ समानता के Favour में खड़े हों। जहाँ किसी को सहायता की आवश्यकता हो, वहाँ उनका सहयोग करें। जहाँ किसी को अवसर न मिल रहा हो, वहाँ अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास करें। यही संत रविदास के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

संत रविदास की ‘बेगमपुरा’ की कल्पना भी हमें एक ऐसे समाज की ओर ले जाती है जहाँ भय, भेदभाव और अन्याय के लिए कोई स्थान न हो। आज हमें इसी भावना के साथ एक ऐसे भारत का निर्माण करना है जहाँ प्रत्येक बच्चा शिक्षा प्राप्त कर सके, प्रत्येक युवा अपनी प्रतिभा के अनुसार आगे बढ़ सके, महिलाओं ko समान अवसर मिलें और प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर मिले।

यह केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। यह हम सभी ki collective responsibility है।

आज social media के इस दौर में हमारे पास संवाद के अनेक माध्यम हैं। हमें इन माध्यमों का उपयोग समाज को Jodne के लिए करना चाहिए, Todne के लिए नहीं।

हमारे विचार अलग ho सकते हैं, लेकिन एक-दूसरे के प्रति सम्मान बना रहना चाहिए। यही Democratic समाज की पहचान है और यही हमारी भारतीय संस्कृति की शक्ति भी है। मैं Universities or Academic Institutions से भी Requset करना चाहूँगा कि संत रविदास पर होने वाले ऐसे आयोजन केवल एक दिन तक सीमित न

रहें। उनके साहित्य, दर्शन और सामाजिक चिंतन पर निरंतर Research हो, Students के बीच संवाद हो और उनके विचार Classroom से निकलकर Society तक पहुँचें।

संत रविदास की एक छोटी-सी पंक्ति में जीवन का बहुत बड़ा संदेश छिपा है-

"मन changa toh kathauti mein Ganga"

परिवर्तन की शुरुआत बाहर से नहीं, हमारे भीतर से होती है। यदि हमारी सोच में समानता है, हमारे Behaviour में सम्मान है और हमारे

हृदय में मानवता है, तो हम अपने परिवार से लेकर पूरे समाज तक Positive Change ला सकते हैं।

आइए, आज हम यह संकल्प लें कि संत रविदास के विचारों को केवल पुस्तकों और मंचों तक सीमित ना रखकर Balki unhe अपने व्यवहार का हिस्सा बनाएँगे।

मैं इस Seminar की सफलता के लिए Organizers को बधाई देता हूँ और सभी Scholars, researchers, and students का अभिनंदन करता हूँ। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिंद!